DOI: 10.51220/hjssh.v10i1.7

Himalayan J. Soc Sci.& Humanities (ISSN-0975-9891): 2015, Vol 10, pp 75-77

संस्कृत कवि डॉ० अशोक कुमार डबराल की दृष्टि में पर्यावरण

डॉ० ललिता,

संस्कृत विभाग पौडी परिसर

Received : 8.10.2015 **Accepted: 19.11.2015**

ABSTRACT

प्रस्तुत शोधपत्र मे कवि अशोक डबराल की साहित्यिक सर्जना में 'पर्यावरण' के विभिन्न पहलुओं का वर्णन प्रस्तुत है।

संस्कृत वाड़.मय अत्यन्त विशाल एवं अगाथ है। संस्कृत रूपी जलधि में अवगाहन करने के उपरान्त इस वाड़.मय की अगाधता स्पष्ट हो जाती है। अपनी दिव्यता एवं भव्यता से ओत प्रोत यह वाड़.मय उदार भावनाओं से अभिभूत एवं अलौकिक है। कहीं वेद ऋचाओं की अनुगूज है, तो कहीं उपनिषदों की ज्ञान गंगा निःस्तृत होती है, तथा कहीं पुराणों का उद्घोष है। अनेकानेक ग्रन्थ रूपी रत्नों से सुसज्जित यह वाड़.मय अनुकरणीय एवं स्तुव्य है।

संस्कृत ग्रन्थ पर्यावरण के भी परिचायक हैं। इन ग्रन्थों में पर्यावरण की वैज्ञानिकता भी झलक उठती है। संस्कृत ग्रन्थों में यज्ञो का वर्णन है। यज्ञो से मेघ बरसते हैं, तथा धरती एवं आकाश के संतुलन से पर्यावरण का वैज्ञानिक संतुलन भी बना रहता है। संस्कृत वाड़.मय में वन, वृक्ष जैसे तुलसी, पीपल, बरगत, आम्र, आंवला, नीम इत्यादि वृक्षों से पर्यावरणीय वैज्ञानिकता की प्रतीति होती है। संस्कृत ग्रन्थों में रंग बिरंगे सुमन सौन्दर्य सृष्टि के अतिरिक्त पर्यावरण का सन्तुलन बनाते हैं। पुष्पों में पर्यावरणीय वैज्ञानिकता है। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अथर्ववेद ज्योतिष ग्रन्थ, पुराण आदि में विभिन्न जडी–बूंटियों का वर्णन है। यह जडी बूंटियां पर्यावरण के संतुलन की क्षमता रखती है। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में गोबर, गौ–मूत्र शुद्धता के साथ– साथ विधुत के भी वाहक है। गौ–मूत्र पर्यावरण के सन्तुलन में अपना विशेष योगदान देता है।

आधुनिक संस्कृत कवि डॉ० अशोक कुमार डबराल ने अपने काव्य में पर्यावरण को अत्यधिक महत्व दिया है। इन्होंने अपने महाकाव्य देवतात्मा हिमालय में **'पर्यावरण कारणा'** सर्ग को भी प्राथमिकता दी है। एन.सी.ई.आर.टी. ने इस सर्ग को पाठयक्रम में स्थान दिया है। कवि के अनुसार सर्वत्र पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। वृक्ष काटे जा रहे हैं। वृक्ष पर्यावरण को संतुलित रखते हैं। वृक्षों के काटे जाने पर पर्यावरण का ह्रास होना स्वाभाविक है। शिकारियों द्वारा वन के पशु–पक्षी मारे जा रहे हैं। ये एक जघन्य अपराध है। पशु–पक्षियों से भी पर्यावरण संतुलित रहता है। चमड़ा, हड्डी, सींग, मांस हेतु शिकारियों द्वारा बन्दूक की गोली से वन प्राणियों को मारा जाता है। जबकि ये पशु वन की सुन्दरता में वृद्धि करते हैं, तथा पर्यावरण को संतुलित करने में अपना विशिष्ट योगदान देते हैं। इनके मारे जाने पर पर्यावरण असंतुलन होना स्वाभाविक है। कवि दुर्लभ कस्तूरी मृग के लुप्त प्राय होने पर अत्यन्त दुखी है। उनके अनुसार वनों में विरोधी स्थिति उपस्थित हो गई है। सर्वत्र नीच मनुष्य एवं गीदड़ आदि प्रसन्न एवं मस्त है। संकट ग्रस्त पर्यावरण के प्रति डॉ० अशोक कुमार डबराल अत्यन्त जागरूक हैं। हिमालय का दोहन हो रहा है। पक्षी नष्ट होते जा रहे हैं। कवि को सर्वत्र विपरीतता का आभास हो रहा है। यथा –

© SHARAD

वनं बिना जलं नास्ति, जीवनं जीवनं बिना
जीवं बिना न जीवातु जाने जीवितसंशयं[1]
वन्यानां मूलत श्च्छैदैः पार्वतानामुपेक्षया
दौर्मनन्याच्छ दोहेन, लुण्ठा कैर्लुष्ठितो हिमः[2]

अर्थात् वन के बिना वन (जल) सम्भव नहीं है। जीवन (जल) के बिना जीवन नहीं रह सकता। प्राणियों के बिना भी मानव का अस्तित्व नहीं मुझे लगता है, कि वन वृक्ष और वन्य प्राणियों के बिना मनुष्य के अस्तित्व को ही गहरा संकट हो गया है। वनों के लुटेरों के द्वारा हिमालय के वनों, वृक्षों, लताओं, औषधियों पशु और पक्षियों के समूल नाश से पर्वतीय जनों की घोर उपेक्षा से और बुरी इच्छा से किये गये वनों के अंधाधुंध दोहन से हिमालय लूट गया है। जन मानस को पवित्र करने वाली मां गंगा भी दूषित है। कवि ने कलियुग में गंगा के दूषित एवं धरती माता के क्रन्दन को इस प्रकार व्यक्त किया है यथा –

गंगा प्रदुष्टा जन पावनीयं तीर्थाः प्रनस्टाः शठ–शाठ्यं जुष्टाः
धर्मौ विलिप्तौ बत् लोभ लिप्तः कलौ हि जाता विपरीत रीतिः[1]!
वनानां छेदनात् तात् प्राणिनां हिंसनात् तथा
प्रकृते र्मन्थनाद वापि वैक्लव्यं भुवि दृश्यते[2]।

अर्थात् कलियुग में सब उलट फेर हो गया है। सब विपरीत दिखाई देता है। जन– जन को पवित्र करने वाली मां गंगा स्वयं दूषित हो गयी है। तीर्थों की महिमा चोर उच्चके और ठगों के द्वारा नष्ट कर दी गई है। हे पुत्र! वनों के काटने से प्राणियों के मारने से और प्रकृति के साथ अत्यधिक छेड़–छाड़ से पृथ्वी पर प्राकृतिक अव्यवस्था दिखाई देने लगी है। ऋतुओं का क्रम बदल गया है। प्राकृतिक असन्तुलन से कहीं वर्षा कहीं सूखा कहीं भूकम्प और भूस्खलन आदि दिखाई देने लगे हैं।

इस प्रकार डॉ० अशोक कुमार डबराल ने अपने महाकाव्य देवतात्मा हिमालय में पर्यावरण पर विशेष बल दिया है। कवि वर्तमान की ज्वलन्त समस्या पर्यावरण के प्रति अन्यन्त सचेत जागरूक एवं मार्गदर्शक है। इन्होंने अपने काव्य के माध्यम से पर्यावरण असंतुलन से भावी संकट के प्रति ध्यान आकृष्ट करवाया है। डॉ० अशोक कुमार डबराल भविष्य की प्रेरणा है। पाठकों को सचेत करके पर्यावरण का विशेष संदेश देने में समर्थ है। कवि ने वर्तमान की गम्भीर समस्या को देवतात्मा हिमालय में विशेष रूप से अभिव्यक्त किया है।

कवि पर्यावरण के समाधान हेतु संदेशवाहक है। जन जन के लिये प्रेरणा हैं, एवं भावी पीढ़ी के लिये विशेष मार्ग–दर्शक हैं। कवि की पर्यावरण के प्रति मौलिक एवं वैज्ञानिक विचारधारा है। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से सभी को पर्यावरण के प्रति विशेष रूप से जागरूकता का संदेश दिया है। हमें पर्यावरण संतुलन के लिये वृक्षारोपण स्वच्छता और वर्तमान में हो रही वनों की अन्धाधुंध कटाई पर ध्यान देना चाहिये। सबका यह प्रयास होना चाहिये कि वन पशु पक्षी निर्बाध रूप से विचरण करते रहे। सर्वत्र हरी–भरी हरियाली रहे। जलाशय जल से पूरित

© SHARAD

रहे। शिकारियों को सावधान करना भी हम सबका कर्तव्य है। वन हरे–भरे रहेंगें तो पर्यावरण का संतुलन बना रहेगा। रंग–बिरंगे फूल नीलाकाश में उड़ते पक्षी गण सभी पर्यावरण को संतुलित करते हैं। इन सबके प्रति भी हमारा विशेष ध्यान होना चाहिये।

डॉ० डबराल की पर्यावरण के प्रति मौलिक एवं वैज्ञानिक विचारधारा है। वे पर्यावरण की विशेष समस्या हेतु विशिष्ट संदेश वाहक हैं, तथा जागरूकता के प्रतीक हैं। जन जन की प्रेरणा हैं। भावी पीढ़ी के लिये विशेष मार्गदर्शक हैं। डॉ० डबराल द्वारा संस्कृत काव्य से पर्यावरण के प्रति जागरूकता एक मौलिकता है एवं प्राचीन भाषा का नवीनता से समन्वय करने का अभूतपूर्व प्रयास है। जो स्तुत्य हैं। कवि ने अपने काव्य में पर्यावरण की विचारधारा को उपस्थित कर महाकाव्य को नवीनता से जोड़ने का सराहनीय प्रयास किया है। यह प्रयास युग–युग तक प्रेरित करता रहेगा, तथा पर्यावरण का विशिष्ट संदेश देगा। इस प्रकार कवि पर्यावरण हेतु भावी प्रेरणा के प्रतीक हैं, एवं पर्यावरण के उद्घोष हैं।

सन्दर्भ सूची–

1. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य 10/8
2. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य 10/9
3. 1. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य 10/10
4. 2. देवतात्मा हिमालय महाकाव्य 10/7